# संस्कृत विभाग

**संस्कृत की उत्पत्ति और शुद्धता**

संस्कृत भाषा को देववाणी , देव भाषा कहा जाता है क्योंकि यह माना जाता है। कि इसे ब्रह्मा द्वारा उत्पन्न किया गया था। जिन्होंने इसे पृथ्वी निवास में रहने वाले ऋषियों को दिया था जिन्होंने तब इसका संचार किया था। ऋग्वेद पवित्र मंत्रों का एक संग्रह माना जाता है जिसको मौखिक परंपरा के माध्यम से सदियों तक संग्रह करने और गुरु में सत्य ज्ञान के संरक्षण के बाद लिखा गया था। संस्कृत के इस संस्करण वैदिक काल का समय 1500 से 500 ईसा पूर्व माना जाता हैं। निस्संदेह ऋग्वेद में प्रकृति की शक्तियों के पूर्ण विवरण के प्रवाह में परिलक्षित होती है।

**वैदिक संस्कृत**

अपने साहित्यिक संघ के संदर्भ में संस्कृत को दो अलग.अलग अवधियों में वर्गीकृत किया गया हैं। वैदिक और लौकिक। वैदिक साहित्य वेदों के पवित्र ग्रंथों विशेष रूप से ऋग्वेद, यजु, साम, अथर्ववेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदों को कहा जाता हैं। जहां भाषा का सबसे मूल रूप का उपयोग किया जाता था। वेदों की रचना का पता 1000 से 500 ईसा पूर्व की अवधि तक है। जब तक कि संस्कृत में मौखिक संचार के माध्यम से लगातार उपयोग किए जाने की एक जोरदार परंपरा थी। यह प्रारंभिक संस्कृत शब्दावली स्वर विज्ञान व्याकरण और वाक्य रचना में समृद्ध हैं। जो आज तक इसकी शुद्धता में नहीं है। संस्कृत भाषा वैदिक, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म में संचार का पारंपरिक साधन रही है। संस्कृत साहित्य प्राचीन काव्य नाटक और विज्ञान के साथ ही साथ धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथों में इस्तेमाल होने का विशेषाधिकार रखता है।

**शिक्षा एवं प्रचार.प्रसार**

भारत के संविधान में संस्कृत आठवीं अनुसूची में सम्मिलित अन्य भाषाओं के साथ विराजमान है। त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत संस्कृत भी आती है। हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली संस्कृत से निर्मित है।

**दृष्टि .**

अपने नैतिक और बहुआयामी विकास के लिए प्रतिबद्धता के साथ मूल्य आधारित गुणवत्ता वाली शिक्षा द्वारा छात्रों को विकसित करना जो उनके शैक्षिकए सामाजिक और आर्थिक कल्याण की दिशा में योगदान देगा।

**विशिष्ट उद्देश्य**

शिक्षा के ज्ञान के साथ छात्रों के बीच भारत के संविधान में उल्लिखित लक्ष्यों और मूल्यों को विकसित करने के लिए और सूक्ष्म और स्थूल स्तरों पर उभरते सामाजिक मुद्दों के साथ एक निरंतर जुड़ाव को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक को स्थानीय के साथ जोड़ना व्यक्तिपरक के साथ उद्देश्य मूल्य के साथ तथ्य और गुणात्मक के साथ मात्रात्मक।

**लक्ष्य**

मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से तर्कसंगत सोच, वैज्ञानिक स्वभाव और युवाओं का विकास करना और भारतीय समाज के उभरते मुद्दों के बारे में छात्रों को परिचित कराना। सामान्य सरल वाक्यों से छात्रों को

संस्कृत भाषा का अनुवाद सीखाना। छात्रों को सामान्यत साहित्य का ज्ञान करवाना। व्याकरण का सामान्य अभ्यास व बोध करवाना।

**प्रोग्राम**

संस्कृत ऐच्छिक -तीन वर्ष
कक्षा – बीए
संस्कृत सामान्य – एक वर्ष
कक्षा – बी एसी

**शिक्षक**

१. संदीप कुमार
सहायक प्राध्यापक

## संकाय प्रोफ़ाइल

संपर्क करें :
ईमेल : sktjind@gmail.com